BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

कक्षा -आठवीं

विषय - हिंदी दिनांक -8.12 2020 से 11.12..2020 तक

उपविषय - सुदामा चरित

सहायक सामग्री -

https://www.youtube.com/watch?v=hYhBhzetO6s

पाठ योजना

विशिष्ट उद्देश्य - * भाषा कौशल का विकास |

* भारत की सांस्कृतिक धरोहर की जानकारी |

* विश्लेषण क्षमता का विकास

कालांश १

सुदामा और कृष्ण की मित्रता की कहानी से जुड़ी कुछ रोचक जानकारी

सुदामा और कृष्ण मंदिर

पूरे भारत में केवल दो ही स्थान हैं, जहां कृष्ण-सुदामा मंदिर है। मित्रता को समर्पित इन मंदिरों में से एक गुजरात के पोरबंदर में और दूसरा मध्यप्रदेश के उज्जैन के पास नारायणधाम में है।

दोनों ही स्थानों को अब इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि लोग यहां आकर दोस्ती के सच्चे अर्थ को समझें।

तक्षशिला तथा नालंदा की तरह उज्जैन भी द्वापर युग में ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। कहा जाता है कि यहां के गुरु संदीपनी आश्रम में भगवान श्रीकृष्ण, उनके मित्र सुदामा और भाई बलराम ने शिक्षा प्राप्त की थी।

ऐसा कहा जाता है कि श्रीकृष्ण ने कंस का वध करने के पश्चात मथुरा का राज्य अपने नाना उग्रसेन को सौंप दिया था। इसके उपरांत वसुदेव और देवकी ने कृष्ण को यज्ञोपवीत संस्कार और शिक्षा के लिए उज्जैन में संदीपनी ऋषि के आश्रम में भेज दिया। यहां ही कृष्ण ने चौंसठ दिन में चौंसठ कलाएं सीखीं तथा वेद-पुराण का अध्ययन किया। आश्रम में ही कृष्ण और सुदामा की भेंट हुई, जो बाद में अटूट मित्रता बन गई। तीनों ने अन्य सहपाठियों के साथ अपनी पूरी शिक्षा यहीं पर पूरी की। शिक्षा के उपरांत कृष्ण ने गुरुमाता को गुरु दक्षिणा देने की बात कही। इस पर गुरुमाता ने कृष्ण को अद्वितीय मान कर गुरु दक्षिणा में उनका पुत्र वापस मांगा। जिसकी मृत्यु प्रभास क्षेत्र में जल में डूबकर हो गई थी। गुरुमाता की आज्ञा का पालन करते हुए कृष्ण ने समुद्र में मौजूद शंखासुर नामक एक राक्षस का पेट चीरकर एक शंख निकाला, जिसे “पांचजन्य” कहा जाता था। इसके बाद वे यमराज के पास गए और सांदीपनी ऋषि का पुत्र वापस लाकर गुरुमाता को सौंप दिया।

महर्षि संदीपनी आश्रम शिप्रा नदी के गंगा घाट पर स्थित है। महाकालेश्वर मंदिर से इसकी दूरी सात किलोमीटर है। यहां पर गुरु संदीपनी कृष्ण, बलराम एवं सुदामा की मर्तियां स्थापित हैं। अधिकांश मंदिरों में नंदी की मूर्ति बैठी हुई अवस्था में ही होती है। इस शिवलिंग के सामने, मंदिर के बाहर खड़े हुए नंदी की एक छोटी सी दुर्लभ मूर्ति है।

विक्रमादित्य के न्याय सिंहासन और बत्तीस पुतलियों की कहानी तो सुनी होगी। महाकाल मंदिर के ठीक पीछे विक्रमादित्य का टीला स्थित है जनश्रुतियों के अनुसार यही बैठकर राजा विक्रमादित्य न्याय करते थे तीन तरफ से सरोवर से घिरा हुआ यह टीला उज्जैन का

इतिहास समेटे हुए है। इस टीले पर महाराज विक्रमादित्य की भव्य प्रतिमा स्थापित है साथ ही राजा विक्रमादित्य के नौ रत्नों धन्वंतरि वैद्य,क्षपणक,अमरसिंह,शंकु,खटकपारा, कालिदास ,बेताल भट्ट,वररुचि,और महान गणतिज्ञ व खगोल शास्त्री वराहमिहिर की प्रतिमाओं के साथ बत्तीस पुतलियों की प्रतिमाएं स्थापित है।

मोक्षदायनी नदी शिप्रा नदी का काफी पौराणिक महत्त्व है और यह मध्य प्रदेश की धार्मिक और ऐतिहासिक नगरी उज्जैन से होकर गुजरती है। उज्जैन की शिप्रा नदी, जहां हर 12 वर्ष बाद सिंहस्थ कुंभ का आयोजन किया जाता है। कुंभ विश्व का सबसे बड़ा मेला है।

कक्षा गतिविधि

कुम्भ मेले पर चर्चा की जाएगी |

कालांश २

प्राचीन भारत के गुरुकुल...

भारत में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की बहुत लंबी परंपरा रही है। गुरुकुल में विद्यार्थी विद्या अध्ययन करते थे। तपोस्थली में सभा, सम्मेलन और प्रवचन होते थे जबकि परिषद में विशेषज्ञों द्वारा शिक्षा दी जाती थी।

प्राचीन काल में धौम्य, च्यवन ऋषि, द्रोणाचार्य, सांदीपनि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, गौतम, भारद्वाज आदि ऋषियों के आश्रम प्रसिद्ध रहे। बौद्धकाल में बुद्ध, महावीर और शंकराचार्य की परंपरा से जुड़े गुरुकुल जगप्रसिद्ध थे, जहां विश्वभर से मुमुक्षु ज्ञान प्राप्त करने आते थे और जहां गणित, ज्योतिष, खगोल, विज्ञान, भौतिक आदि सभी तरह की शिक्षा दी जाती थी।

प्रत्येक गुरुकुल अपनी विशेषता के लिए प्रसिद्ध था। कोई धनुर्विद्या सिखाने में कुशल था तो कोई वैदिक ज्ञान देने में। कोई अस्त्र-शस्त्र सिखाने में तो कोई ज्योतिष और खगोल विज्ञान में दक्ष था। जैसा कि आजकल होता है कि इंजीनियरिंग कॉलेज अलग और कॉमर्स कॉलेज अलग।

अध्ययन-अध्यापन

नया पाठ पूर्व पाठ से सम्बन्धित होता है इसलिए पूर्वावलोकन किया जाता था। पाठ सिखाना प्रारम्भ करने के दस मिनट पूर्व आचार्य परीक्षा लेते थे कि, कल पढाए हुए पाठ में से कितना आकलन हुआ है। तत्पश्चात ही नया पाठ आरम्भ होता था। इस शिक्षापद्धति में प्रतिदिन आचार्य विद्यार्थियों की विद्यार्जन की जांच करते थे; अर्थात उनकी प्रतिदिन ही परीक्षा होती थी। इसलिए परीक्षा की तिथी तथा उसकी तैयारी का प्रश्न ही नहीं उठता था। नित्य ही परीक्षा होती थी।

आर्थिक सहायता

हमारी शिक्षासंस्थाएं कदापि सरकारी सहायतापर निर्भर नहीं थी और वर्तमान में भी नहीं है। लोग स्वयं वहां दान देकर स्वयं को कृतकृत्य मानते थे। प्रशासन ने भी कभी शिक्षाव्यवस्थाओं अथवा संस्थाओं में हस्तक्षेप नहीं किया। हमारी प्राचीन राजनीति एवं प्रशासनप्रणाली की यही नीति थी। शिक्षा पूर्णरूप से स्वतन्त्र थी

पाठ्यक्रम : पाठ्यक्रम सिर्फ इतना था कि हमारे बच्चों को सबकुछ आना चाहिए | भारतीय शास्त्रों में ६४ कलाएं और १४ विद्याएं हैं जिनका परिचय छात्रों को होता था |

गुरुकुल से निकले हुए छात्र के पास कोई कागज़ (डिग्री) नहीं होता था | डिग्री इसलिए नहीं क्योंकि उनसे नौकरी नहीं करवानी थी | वह पढ़ने के बाद नौकरी दे सके ऐसा तैयार करना | गुरुकुल में स्वयं का कार्य स्वयं करना, स्वयं कपड़े बनाकर तैयार करना, स्वयं खेती कर अन्न उगाकर भोजन तैयार करना, किसी पर भी अवलंबित न रहकर स्वयं कार्य कर दूसरों को सहयोग करना गुरुकुलों का मुख्य कार्य था | इसलिए गुरुकुलों में सफाई कर्मचारी, चौकीदार नहीं होते | आचार्य-छात्र मिलकर गुरुकुल चलाते हैं |

परीक्षा : गुरुकुलों में छात्रों का मूल्यांकन उनकी विशेषता के आधार पर करते थे | जो आचार्यों ने छात्रों को पढ़ाया है, वह छात्र उनसे छोटे छात्रों को पढ़ाएंगे | यदि पढ़ाया हुआ छोटे

छात्रों ने बता दिया तो बड़े छात्र उत्तीर्ण (पास), अन्यथा पुनः पढ़ो | विद्या देनी होती है | स्वयं तक सीमित न रखकर देना यह परीक्षा का मूल उद्देश्य था |

कक्षा गतिविधि -

१ - उपरोक्त विवरण पढ़ने के उपरांत आपके मन में कौन से प्रश्न उठते है ?

२ - मेरे सपनो का विद्यालय - विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए |

मूल्यांकन -

* **कक्षा गतिविधि पर आधारित |**
* **मौखिक लघु प्रश्नों द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन |**